Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 6, August-2018, ISSN 2230-7540

बाल्मीकि रामायण का भावपक्ष

सुधीर कुमार[1]*, डॉ॰ मीनेश जैन[2]

[1] शोध छात्र पीएच॰डी॰ (संस्कृत), सनराईज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

[2] शोध-निर्देशक, संस्कृत-विभाग, सनराईज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सार - आदिकवि संस्कृत रामायण के लेखक वाल्मीकि हैं, जिन्हें आदिकवि के नाम से भी जाना जाता है। रामायण संस्कृत में द्वारा लिखी गई थी। इसे महर्षि वाल्मीकि द्वारा लिखित रामायण के रूप में जाना जाता था। रामायण के नायक , राम का जीवन, उन मूल्यों और नैतिकताओं के रूपक के रूप में कार्य करता है जिन्हें हम पूरी कहानी में सीखते हैं। आदिकवि को बनाने वाले दो पद हैं, जो दोनों का मिश्रण है। एक 'आदि' पहले को संदर्भित करता है, और 'कवि' एक कवि या प्रतीक्षारत कवि को संदर्भित करता है। रामायण वाल्मीकि द्वारा लिखित सबसे प्राचीन संस्कृत महाकाव्य है। इस तथ्य के कारण कि उन्होंने पहला संस्कृत महाकाव्य लिखा था , वाल्मीकि को "आदिकवि" करार दिया गया था। आदिकवि वाल्मीकि की जाति थी।

----------X----------

प्रस्ताडवना

भाव पक्ष की दृष्टि से रामायण की कथावस्तु , इसके नायक तथा इस महाकाव्य के रस पर संक्षेप में विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है। किसी भी महाकाव्य की सिद्धि इन तीनों तत्वों के सफलतापूर्वक विन्यास पर ही निर्भर करती है। यद्यपि रामायण के उपजीव्य काव्य होने से इनका सफलतापूर्वक विन्यास सिद्ध ही है , तथापि इनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

(क) रामायण की कथा-वस्तु:

बालकाण्ड - सरयू नदी तथा कोसल देश की अयोध्या नगरी का वर्णन करते हुए दशरथ का वर्णन है। उन्हंे देशोन्नित करने वाला महान् शासक कहा गया है। अयोध्या का निर्माण मनुष्यों के राजा मनु ने कराया। तदुपरान्त महाराज दशरथ द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञ के फलस्वरूप रामादि चार पुत्रों के जन्म का वर्णन करके राम को उन सबसे ध्वजा के समान तथा पिता का आनन्दपूर्वक कहा है। फिर विश्वामित्र के साथ राम एवं लक्ष्मण का जाना , विश्वामित्र से विद्याएं प्राप्त करके राम द्वारा यज्ञ-विध्वसंक राक्षस-राक्षसियों का वध करना तथा इसके अनन्तर मिथिला जाकर शिव-धनुष को तोड़कर सीता के साथ विवाह तथा अन्य तीनों भाईयों के विवाह का वर्णन करके राम तथा सीता के परस्पर प्रगाड़ प्रेम का वर्णन है।

अयोध्या काण्ड - दशरथ द्वारा राम को राजा बनाने का प्रस्ताव रखने पर राजसभा के अनुमोदन करने पर राम को युवराज पद पर मनोनीत होना सुनाया गया है। मंथरा की दुरभिसन्धि से विघ्न की उत्पत्ति होती है तथा कैकेयी द्वारा वनवास तथा भरत की युवराज पर नियुक्ति के वचन को सुनकर दशरथ कहते हैं-

"राम तो सबसे प्रिय बोलते हैं , उन्हें मैं तुम्हारे अप्रिय वचन कैसे सुनाऊंगा?"1 परन्तु राम तो पिता की आज्ञा से बढ़कर संसार में दूसरा कोई धर्म ही नहीं मानते तथा माता कौश्लया को इस बात से सन्तप्त देखकर उन्हें सांत्वना देते हैं। राम तथा सीता का संवाद बहुत ही महत्वपूर्ण है। सीता कहती है कि पिता , माता, भाई, पुत्र तथा पुत्रवधु तो अपने पुन्य कर्मों का फल भोगते हुए अपने प्रारब्धानुसार जीवन यापन करते हैं।

परन्तु स्त्री ही स्वामी के भाग्य का अनुसरण करती है। 2 राम, सीता एवं लक्ष्मण के साथ वनगमन करते हैं तथा कौसल्या एवं सुमित्रा के निकट विलाप करते दशरथ प्राण

त्याग देते हैं। भरत आकर विलाप करते हैं तथा राम को वापिस लाने चित्रकूट जाते हैं।

राम-भरत संवाद , जाबालि-राम वापिस संवाद तथा राम-वशिष्ठ संवाद के माध्यम से मार्मिक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति हुई है। भरत के वापिस जाने पर राम को अत्रि आश्रम जाना तथा अनसूया द्वारा सीता को पतिव्रत धर्म का उपदेश देना वर्णित है।

अरण्यकाण्ड- दण्डकारण्य में प्रवेश करके राम ने तपवस्यिों के आश्रमों का समूह देखा। राक्षसों द्वारा सताए तपवस्यिों की करूणा गाथा से प्रभावित होकर राम कहते हैं-

"कठोर व्रत का पालन करने वाले दुःखी मुनिजनों की हमें रक्षा करनी चाहिए। "3 सीता के साथ दोनों भाई पंचवटी पहुंचे तथा वहां इनकी शूर्पणखा से भंेट होती है। उसके नाक-कान कटने से खर-दूषण से युद्ध होना उनका वध तथा शूर्पणखा द्वारा लंकेश रावण को सीता के सौन्दर्य वर्णन कर उसका अपहरण करने की प्रेरणा देना वर्णित है।

मारीच का रावण से संवाद भी होता है।मारीच कहता है कि राम तो धर्म के मूर्तिमान स्वरूप , सज्जन एवं सत्यपराक्रमी हैं। रावण मारीच की हितकारी पथ्योक्ति पर ध्यान नहीं देता तथा सीता-हरण का जघन्य कृत्य करता है।

किष्किन्धाकाण्ड - इसमें पम्पा सरोवर का बहुत सुन्दर वर्णन है। इसके अनन्तर राम के द्वारा हनुमान की प्रशंसा , सुग्रीव से मैत्री तथा बालि वध का प्रकरण आता है। बाली राम के प्रति अपना आक्रोश प्रकट करके उन्हें अधर्मी कहता है। राम बाली को उसका अपराध बताते हैं , जिसे स्वीकार कर बाली की सुगति होती है। तदुपरान्त सुग्रीव सीतान्वेषणार्थ वानरों को भेजा जाता है।

हनुमान् अपना शरीर बड़ाकर महेन्द्र पर्वत पर चढ़ जाते हैं। वे उसे पैरों से दबाते है तो पर्वत , सिंह से त्रस्त मतवाले हाथी के समान चिंघाड़ने लगता है। वहां तप करने वाले ऋषि गण उस ऊंचे पर्वत को छोडकर जाने लगे तो पर्वत उसी प्रकार दुःखी दिखाई देने लगा , जैसे कोई पथिक साथियों के छूट जाने से दुःखी होता हैं।

सुन्दरकाण्ड -

इसमें हनुमान् जी के द्वारा सागरोल्लंघन , लंका-प्रवेश, सीता का दर्शन न होने पर हनुमान-विलाप वर्णित है। तदन्तर रावण का अशोक-वाटिका आना , सीता को धमकाना तथा सीता-हनुमान संवाद है।

हनुमान द्वारा अशोक वाटिका को नष्ट-भ्रष्ट करना , बंधकर रावण के दरबार में जाना, उसे समझाना, रावण द्वारा उनके वध की तथा तदुपरान्त जलाने की आज्ञा देना वर्णित है।

हनुमान् द्वारा लंकादहन , इसके पश्चात् राम को सीता का समाचार सुनाना वर्णित है।

युद्धकाण्ड -

इसमें अभिजित समुद्र पर आना तथा शुभ मुहूर्त में राम , सुग्रीव को सेना के प्रस्थान की तैयारी का आदेश देते है। उधर रावण अपने साथियों से परामर्श करता है , जिस पर विभीषण ने उससे कहा , "राम ने तुम्हारा क्या उपकार किया है कि तुम उसकी यशस्विनी पत्नी को जनस्थान से हरण करके ले आए हो?"4

परन्तु रावण कालवश होने कारण क्रुद्ध होकर कहने लगा , "शत्रु तथा कुपित सर्प के साथ रहना सम्भव भी है , किन्तु मित्र कहलाने वाले तथा शत्रु का पक्षपात करने वाले व्यक्ति के साथ सर्वथा असम्भव है।"5

विभीषण रावण का त्याग कर राम की शरण में पहुंचता है तो राम उसे अभय एवं आश्रय प्रदान करते हैं। इस काण्ड में राम का अपने भाई लक्ष्मण के मूच्छित होने पर किया विलाप भी अत्यन्त मार्मिक है। 6 यहां आदित्यहृदय स्तोत्र नामक सूर्य स्तुति बहुत मार्मिक है। राम-रावण की सेनाओं के मध्य में युद्ध होता है। युद्ध में इन्द्रजित , कुम्भकरण आदि समस्त राक्षस-कुल की मृत्यु के पश्चात् रावण वध कर रामयुद्ध को विजित करते हैं तथा विभीषण से रावण का दाह संस्कार करने को कहते है। तत्पश्चात् सीता की अग्नि परीक्षा होती है। अग्निदेव सीता राम को समर्पित करते हुए उसकी शुद्धि एवं निष्पाप होने का कथन करते हैं।

एषा ते राम वैदेही पापमस्यां व विद्यते।

विशुद्धभावां निष्पांपां प्रतिगृहीष्व मैथिलीम्।7

इसके पश्चात् राम सीता को ग्रहण कर पुष्पक विमान में बैठकर अयोध्या की ओर प्रस्थान करते है। अयोध्या के समीप राम के आगमन का शुभ समाचार सुनकर भरत की

प्रसन्न्ता की कोई सीमा नहीं रहती। इस काण्ड कें अन्त में राम-राज्य की प्रशंसा की गई है।

उत्तरकाण्ड - इस काण्ड में रावण की उत्पत्ति , लंका-प्राप्ति, कुबेर से पुष्पक विमान छीनना , यम पर रावण की विजय , रावण का इन्द्र को बन्दी बनाना तथा रावण की वाली के साथ मित्रता आदि घटनाएं वर्णित है। हनुमान् की उत्पत्ति के वृत्तान्त के पश्चात् अभिषेक में आए जनक आदि राजाओं की विदाई वर्णित है। राम का भद्र के द्वारा सीता के प्रति लोक अपवाद सुनकर लक्ष्मण को वन में सीता को छोड़ देने की आज्ञा देना , लक्ष्मण द्वारा सीता का वन में त्याग तथा सीता का बाल्मीकि के आश्रम में प्रवेश 8 च्यवनादि मुनियों का प्रार्थना पर राम द्वारा आज्ञा पाकर शत्रुघ्न का लवणासुर को मारने के लिए प्रस्थान , कुश लव का जन्म , राम द्वारा शम्बूक वध , राम का अगस्त्य मुनि से आभूषण प्राप्त करना, वृत्रासुर की तपस्या तथा वृत्र वधोपरान्त इन्द्र का ब्रह्महत्या से उद्धार ,9 राम के द्वारा अश्वमेघ यज्ञ की तैयारी, अश्वमेघ-यज्ञ का घोड़ा छोड़ना , बाल्मिीकि का सन्देश, कुश-लव के द्वारा रामायण गान , राम का बल्मीकि के पास दूत भेजना तथा बाल्मीकि का राम को सीता की शुद्धि का विश्वास दिलाना 10 तथा सीता का रसातल प्रवेश वर्णित है। 11 तत्पश्चात् कौसल्या आदि माताओं का स्वर्गवास, भरत की गन्धर्व-विजययात्रा, लक्ष्मण तनय अंगद-चित्रकेतु का अभिषेक, राम के पास काम का आगमन , राम के समीप दुर्वासा का आना, लक्ष्मण का त्याग, लव-कुश का राज्याभिषेक, राम का महाप्रस्थान तथा रामायण श्रवण फल को बतलाकर यह महाकाव्य समाप्त होता है।

(ख) नेता -

आचार्य विश्वनाथ ने अपने साहित्यदर्पण ग्रन्थ में महाकाव्य के नायक की विशेषताओं का वर्णन करते हुए बताया है कि इसमें एक देवता अथवा सद्वंश क्षत्रिय , जिसमें धीरोदात्तत्वादि गुण विद्यमान हों , नायक होता है। 12 रामायण के राम में ये गुण पूर्णरूपेण से विद्यमान हैं। राम भारतीय संस्कृति की समस्त विशिष्टताओं से युक्त है। महर्षि बाल्मीकि ने आदर्श चरित राम के व्यक्तित्व की विशेषताओं का वर्णन करते हुए कहा हैं-

"राम बहुत ही रूपवान एवं पराक्रमशील हैं। वे किसी का दोष नहीं देखते हैं। संसार में अनुपम है व दशरथ के समान ही उत्तम पुत्र हैं। यदि कोई उन्हें कठोर बात भी कह देता है तो सदैव उसे याद रखते तथा उससे सन्तुष्ट रहते हैं। कोई सैकड़ों अपराध करता तो उन्हंे भूल जाते हैं। शास्त्राभ्यास काल में भी समय निकालकर शील , ज्ञान एवं आयु मंे श्रेष्ठ जनों का संग कर उनसे शिक्षा लेते है। "13 इसके अतिरिक्त वे बुद्धिमान एवं मृदुभाषी है। मिलने वाले से पहले स्वयं प्रियवचन बोलते है। बल तथा पराक्रम में बढ़े-चढ़े होने पर भी उन्हें कभी गर्व नहीं होता है। कभी कोई झूठ बात तो उनके मुख से निकलती ही नहीं है। विद्वान होते हुए भी वृद्ध लोगों के प्रति भक्ति करते है। उनका प्रजा के प्रति तथा प्रजा का उनके प्रति अत्यधिक अनुराग है।14

महर्षि बाल्मीकि ने उन्हें सद्ग्राही एवं स्थित प्रज्ञ कहा है- "प्रसन्नता या न गताभिषेकतस्तथा न मस्ले वनवासुदःखत " अर्थात् वे राज्य प्राप्ति पर प्रसन्न नहीं हुए तथा वनवास से दुखी नहीं हुए। राम महान् आदर्श प्रस्तुत करते है। उनके आचार-विचार मानवीय संस्कृति की गौरवगाथा का गान है। रावण की मृत्यु पर वे विभीषण से कहते हैं कि वैर तो मरने तक ही रहता है, उसके बाद तो उसका कोई प्रयोजन नहीं रहता। अब हमारा प्रयोजन भी सिद्ध हो चुका है। इसलिए तुम भाई का दाह संस्कार करो तथा इन विलाप करती हुई स्त्रियांे को धैर्य बंधाओ। 15 अतः वे रावण का अन्तयेष्टि संस्कार विधि पूर्वक करने को कहते है।

राम सदा दान करते हैं तथा कभी दूसरे से प्रतिग्रह ग्रहण नहीं करते है। तथा न ही कभी अप्रिय बोलते हैं। प्राण संकट उपस्थित होने की विषम दशा में भी सत्य पराक्रम राम इन नियमों का पालन करते हैं।16

राम की धर्मनिष्ठा लक्ष्मण के प्रति कहे (वनवास की आज्ञा के समय) इन वचनों से स्पष्ट अभिव्यक्त होती है- "संसार में धर्म ही सबसे श्रेष्ठ है , धर्म में ही सत्य की प्रतिष्ठा है तथा पिता का यह वचन भी धर्म से युक्त है।"17

जनक नन्दिनी को अपने वन-गमन का सामाचार देने में राम अत्यन्त शिष्ट एवं कोमल शब्दों का प्रयोग करते हुए कहते हैं कि हे शुभे! पिता जी ने मुझे दण्डकारण्य का सम्पूर्ण राज्य दिया है , अतः हे भामिनि! मैं शीघ्र ही उसका पालन करने के लिए वहा जाऊंगा। 18 दण्डकारण्य में राक्षसों द्वारा सन्तप्त तपस्वियों की रक्षा करने के लिए तुरन्त प्रण करते हैं।19

www.ignited.in

महर्षि बाल्मीकि ने राजा दशरथ के मुख से श्रीराम चन्द्र की प्रशंसा करवाते हुए उन्हें क्षमावान , तपस्वी त्यागी तथा दयालु बताया है।20

उन्होंने अपने जीवन में धर्म को पूर्णः अपनाया हुआ है। उन्होंने धर्म की रक्षा हेतु प्राणों का मोह शारीरिक सुख तथा राज्य-वैभव आदि समस्त लौकिक वस्त्ुओं का त्याग कर दिया है। 21 वे माता-पिता की आज्ञा का पालन करना ही अपना मुख्य धर्म मानते हैं22तथा अपने समस्त परिवार को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करते हैं। 23 राम के सत्यवादी होने की भी चर्चा की गई है। 24 वे समस्त राजकीय सुखों का परित्याग करके चैदह वर्ष के लिए वनवास को चले जाते है।25 अतः उपर्युक्त विवरण से रामायण के इस नायक में मृदुभाषिता कत्र्तव्यपरायणा , मातृ-पितृ भक्ति , अनुशासन आदि गुण परिलक्षित होते है तथा समाज के सामने एक आदर्श की स्थापना करते है।

(ग) रस:

काव्य का प्रमुख अंग रस होता है यही कथानक को जीवित रखता है तथा पाठकों को बांधे रखता है। बालकाण्ड में उल्लिखित है कि इस काव्य में श्रृंगार , करूण, रौद्र, वीर, भयानक बीभत्स रसों का प्रयोग है।

> हास्य श्रृंगार कारूण्य रौद्रवीर भयानकैः।
>
> बीभत्सादिरसैर्युक्तं काव्यमेतदगायताम् ।। वा. रा., बा. 4/8

आचार्य विश्वनाथ ने महाकाव्य का लक्षण करते हुए कहा है कि महाकाव्य में श्रृंगार , वीर अथवा शान्त में से कोई एक रस अंगी होता है तथा अन्य रस गौण होते है।26

महर्षि बाल्मीकि द्वारा विरचित रामायण महाकाव्य के प्रमुख रस की चर्चा करने पर ज्ञात होता है कि कतिपय आचार्यों ने इसका मुख्य रस करूण माना है।27

वास्तव में प्रतिभा का उत्तम निष्कर्ष करूण रस ही है। करूणरस में जीवन की गहन अनुभूति से कवि का तन्मयीभवन आवश्यक है। अयोध्याकाण्ड में करूण हृदयच्छिद् वियोग का शोक भी करूण रस को हेतु है।

कैकेयी के भवन में उसकी वर याचना से शोकनिमग्न महाराज दशरथ के निर्देशानुसार सुमन्त्र के साथ राम वहां पधारते हैं तथा पितृचरण में नमन निवेदन करते हैं। महाराज की दृष्टि आकुल आश्रुओं से परिपूरित है तथा राजीव लोचन सामने उपस्थित है, किन्तु वे प्राणप्रिय पुत्र को न देख पाते , न बोल पाते। उनकी दृष्टि अन्ध तथा वाणी मूक हो गई। 'राम' केवल इतना ही उनके मुख से निकल सका तथा वे मोह दशा को सद्यः प्राप्त हो गए।28

कैकेयी के करूण वचनों को सुनकर महाराज बोले तो कुछ नहीं, किन्तु अत्यन्त विकल होकर अपनी अप्रियवादिनी प्रियादेवी का मुख क्षणभर निष्पलक निहारते रह गए।29

राम, लक्ष्मण तथा सीता के वन चले जाने पर कालरात्री के समान जब वह आधी रात व्यतीत हो गई , तब महाराज दशरथ कैकेयी से कहते हैं- "राम के पीछे गई मेरी दृष्टि अभी तक लौटी नहीं है। कौसल्ये! मुझे अपने हाथ से स्पर्श करो, मैं तुम्हें देख नहीं पा रहा हूँ।"30

शोक की अभिव्यक्ति गहन उदासीनता द्वारा भी सुकर है। राम-वनगमन के दिन किसी ब्रह्मचारी ने अग्निहोत्री नहीं किया तथा न ही किसी गृहस्थ के घर चूल्हा जला।31

अशोक वाटिका में श्रीराम भक्त हनुमान् को देख लेने के पश्चात् सीता के अन्तःकरण की प्रतिक्रिया करूण रस को ही अभिव्यक्त करती है- "यह स्वप्न नहीं हो सकता , क्योंकि शोक तथा दुःख से पीड़ित रहने के कारण कभी नींद आती नहीं है। मुझे तो पूर्णचन्द्र के समान मुख वाले श्रीरघुनाथ से बिछुड़ जाने के कारण अब सुख सुलभ ही नहीं है। मै बुद्धि से निरन्तर राम का ही चिन्तन करती हूँ, वाणी से निरन्तर उनका ही व्याख्यान करती हूँ। तदनुसार उनसे सम्बद्ध बातें ही सुनाई देती हैं तथा वैसी ही घटना देख रही हूँ। मेरे समस्त भाव उन्हीं में समर्पित हैं, उन्हीं की अभिलाषा से संतप्त होकर मैं निरन्तर उन्हीं का चिन्तन करती हूँ , अतः वैसा ही सुनती तथा देखती हूँ।"32 महर्षि द्वारा क्रोंच युगल में से एक का निषाद् द्वारा वध कर दिए जाने पर सहसा निकला श्लोक करूण रस का ही परिणाम था। 33 जिस कारण से इस महाकाव्य की रचना हुई। राम-भरत का चित्रकुट में मिलन , रावण द्वारा सीता का अपहरण किए जाने पर राम तथा सीता का करूण विलाप , ख्वाली की मृत्यु पर तारा का विलाप , रावण की मृत्यु पर विभीषण का रूदन , सीता-निर्वासन, सीता का पृथ्वी में समाना , लक्ष्मण का परित्याग आदि समस्त घटनाएं करूण रस की अतिशयिता को अभिव्यन्जित करती है।

किन्तु कतिपय विद्वानों का मत यह है कि रामायण वीर रस प्रधान महाकाव्य है। अयोध्या , किष्किन्धा तथा लंका के अधिकांश पुरूष पात्र पहले वीर योद्धा है , बाद में कुछ और सभ्यता के मध्यकाल तक प्रजा के रक्षण हेतु राजा का वीर होना अनिवार्य माना जाता है राम के चरित्र के मुख्य गुण सीता के हनुमान के प्रति कहे गए वाक्य में स्पष्ट है-हे हनुमान! राम के उत्साह , पुरूषार्थ, बल, दयालुता, कृतज्ञता, पराक्रम व प्रभाव ये सभी गुण विद्यमान है।34

दण्डकारण्य में ऋषि राम से सविनय प्रार्थना करते हुए कहते है-हे वीर! इस भूमण्डल पर आपसे बढ़कर कोई भी दिखाई नहीं देता। आप इन राक्षसों से हमंे बचाइए। 35 ताटका के वध के समय भी वीर रस प्रतीत होता है। राम उसे वज्र की भांति आती देखकर बाण-संधान करते हैं , जिसके फलस्वरूप ताटका प्राणों का त्याग कर पृथ्वी पर गिर पड़ती है।36

वीर-रस की अभिव्यंजना युद्ध के समय होना हो स्वाभाविक ही है। राम-रावण युद्ध में वीर रस की चरम सीमा परिलक्षित होती है , जब राम बाण से एक सिर काटते है। और उसी स्थान पर दूसरा सिर निकल आता है। राम इस प्रकार रावण के सहस्र सिरों को काटते हैं।37

वे दिन'-रात निरन्तर युद्ध करते हैं 38 तथा अन्त में रावण जैसे अप्रत्याशित योद्धा का संहार करने में सफल होते है। राम तथा रावण में ऐसा भंयकर युद्ध होता है कि उसकी उपमा नहीं प्राप्त होती। अतः देवता कह उठते हैं कि राम-रावण युद्ध राम रावण के समान है।39

सीता की उक्तियों से भी वीर रस की अनुभूति होती है। रावण का तिरस्कार करती हुई सीता कहती है कि तू गीदड़ मुझ दुर्लभ ंसिंहनी को प्राप्त करना चाहता है। जैसे सूर्य की प्रभा को तू छू नहीं सकता , वैसे ही तू मेरा स्पर्श भी नहीं कर सकता। तेरा इतना साहस कि राम की प्रिया का अपहरण करना चाहता है। अवश्य ही तू गर्दन में पत्थर बांधकर समुद्र को पार करना चाहता है तथा सूर्य-चन्द्र को हाथ से ग्रहण करना चाहता है40 वह राक्षिसियों से कहती है कि तुम्हारे देर तक बकवास करने से क्या लाभ ? तुम मुझे छेदो चीरो, टुकडे-टुकड़े कर डालो , आग में सन्तप्त कर दो अथवा जला कर सर्वथा भस्म कर दो , तो भी मैं दुष्टबुद्धि रावण के पास फटक भी नहीं सकती। 41 ये समस्त वाक्य सीता के अपूर्व साहस , धैर्य तथा निर्भीकता को प्रकट करते हुए वीर रस की अभिव्यक्ति करवाते है। इसी प्रकार अन्यत्र अनेक स्थ्लों पर इस वीर रस की अभिव्यंजना करवाई गई है।

रामायण के फलागम के आधार पर भी रस का निर्णय असमीधीन नहीं होगा। रावण-वध द्वारा सीता का उद्धार तथा वीर वंश की मर्यादा की रक्षा इस महाकाव्य का फलागम है। अतः इसका मुख्य रस वीर ही मानना चाहिए। करूणा रस की प्रवृत्ति अन्तर्मुख व वीर की बहिर्मुख है।

करते हुए एक आदर्श समाज की ओर संकेत करता है। यह रामायण उपजीव्य काव्य के रूप में प्रसिद्ध है तथा इसे आधार बना कर अनेक महाकाव्य , गीतिकाव्य, नाटक, चम्पू कथासाहित्य आदि का निर्माण विभिन्न भाषाओं के कवियों द्वारा किया गया है रामायण मंे अनुप्रास , यमक, उपमा, रूपक दीपकादि अलंकारों का वैदर्भी , पंचाली तथा गौड़ी रीति का अनुष्टुभ , उपेन्द्रवज्रा तथा उपजाति आदि छन्दों का सफलतापूर्वक प्रयोग किया गया है। सात काण्डों में विभक्त इस आदिकाव्य का नेता राम मृदुभाषिता , कत्र्तव्यपरायणता, मातृ-पितृ भक्ति आदि गुणों से युक्त है इस महाकाव्य के मुख्य रस के निर्धारण में विद्वानों में मतभेद है। कुछ विद्वानों करूण रस को इसका अंगी रस स्वीकर करते हैं तथा वीर ही मानना चाहिए। यहां करूण रस की प्रवृति अन्तमुर्खी है तथा वीर रस की प्रवृत्ति बहिर्मुखी है।

संदर्भ सूची:

1. वा., रा., अयो, 12/32
2. स्वर्गोऽपि च बिना वासो भविता यदि राघव। त्वया बिना नरव्याघ्र नाहं तदपि रोचये।। वही , अयो. 27/12
3. ते चार्ता दण्डकारण्ये मुनय संशितव्रताः। मां सीते स्वयमागम्य शरण्याः शरणं गताः।। वा . रा., अ., 10/4
4. किंचराक्षसराजस्य रामेणापकृत पुरा। आजहार जनस्थानाद् यस्य भार्या यशस्विनः।। वा . रा., यु. 9/13
5. वसेत् सह सपत्नेन क्रुद्धे नाशीविशेणा वा। न तु मित्रप्रवादेन संवसेच्छत्रु सेविना।। वही, यु., 16/2
6. वा. रा., यु., 49/5
7. वही, यु., 118/5, वही, यु., 118/10
8. शिरसा वन्द्य चरणौ ततेत्याह कृताञ्जलिः। तं प्रयान्तं मुनिं सीता प्राञ्जलिः पृष्ठतो न्वगात्। वही, उ0, 49/18
9. देवानां भाषितं श्रुत्वा ब्रह्महत्या महात्मनाम्। सन्निधै स्थानमन्यत्रा वरयामास दुर्वासा।। वा. रा., उ., 86/12

www.ignited.in

10. वही., उ., 96/22-23
11. वही, उ., 97/20-21
12. सर्गबन्धे महाकाव्यं तत्रौको नायकः सुरः। सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्तगुणान्वित। साहित्यदर्पणः विश्वनाथ, 6/315-316
13. मरणान्तानि वैराणि निर्वृत्रं नः प्रयोजनम्।। संस्कारः क्रियतामस्य ममाप्येष यथा तव।
14. वही, यु., 111/100-101
15. दद्यान्तं प्रतिगृहणीयान्न ब्रूयात् किञ्चिदप्रियम्। अपि जीतिहेतोर्वा रामः सत्यपराक्रमः।। वा . रा. सु., 33/36
16. धर्मो हि परमो लोकधर्मे सत्यं प्रतिष्ठितम्। धर्मसंश्रितमेतच्च पितुर्वचनमुक्तमम्। वही , अयो. 21/41
17. राजा मे दण्डकारण्ये राज्यं दत्तं शुभेअखिलम्। अतस्तत्पालनार्थय शीघ्रं यास्यामि भामिनी।। वही , अयो. 4/57
18. ते चार्ता दण्डकारण्ये मुनयः संशितव्रताः। मां सीते स्वयमागम्य श्रण्याः शरणं गताः।। वहीं अ. 10/4
19. क्षमा यस्मिस्तपस्त्यागः सत्यं धर्मः कृतज्ञता। अप्यहिंसा च भूतानां तमृते का गतिर्मम।। वही , अयो. 12/33
20. जीवितं सुखमर्थ च धर्महेतोः परित्यजन्। हियमाणाध्र्मेण मां नाघव न पश्यसि।। वही , अ. 49/25
21. एष धर्मश्च सुश्रेणि पितुर्मातुश्च वश्यता। आज्ञां चाहं व्यतिक्रम्य माहं जीवितुमुत्सहे।। वही, अयो. 30/32
22. स मा पिता यथा शास्ति सत्यध्र्मपथे स्थितः तथा वर्तितुमिक्ष्च्छामि स हि धर्मः सनातनः।। वा . रा. अयो., 30/38
23. धर्मज्ञः सत्यसंघश्च शीलवाननसूयकः।। प्रियवादी च भूतानां सत्यवादी च राघवः। वही, अयो. 2/31-32
24. अहं निदेशं भवतो यथोक्तमनुपालयन्। चतुर्दश समा वत्सये वने वनचरैं सह। मा विमर्शों वसुमति भरताय प्रदीयताम्।। वही, अयो. 34/43-44
25. श्रृंगारवीरशान्तानमेक अंगीरस इष्यते। अंड्ढगानि सर्वेऽपि रसाः।। साहित्यदर्पण, 6/317
26. ;पद्ध करूणादावपि रसे जायते पत्परं सुखम्।। सचेतसामनुभवः प्रमाणं तत्र केवलम्।। किन्च तेषु यदा दुःखं न को अपि स्यातदुन्धमुखः।। तथा रामायणादीनां भविता दुःखहेतुता। साहित्यदर्पण , 3/4-6
;पपद्ध ततः करूणैकरसानां रामायणादिमहाप्रबन्धनाम्।। दशरूपकः धनन्जय , चतुर्थ प्रकाश।।
27. रामेत्युक्तवा च वचनं वाष्पपर्यकुलेक्षणः। शशक नृपतिर्दीनो नेक्षितुं नाभिभाषितम्।। वा . रा., अयो., 18/3
28. नाभ्यभाषत कैकेयी। मुहूर्त व्याकुलेन्द्रिय। प्रैक्षतनिमिषो देवीं प्रियामप्रिवादिनीम्।। वा . रा ., अयो. 19/42
29. राममेंअनुगगता दृष्टिरद्यपि न निवर्तते। न त्वां पश्यामि कौसल्ये साध् मां पाणिना स्पृश।। वही , अयो0, 42/34
30. नागिनहोत्राण्यहूयन्त नापचन् गृहमेधिनः। अकुर्वन् न प्रजाः कार्य सूर्यश्चान्तरधीयतः।। वा 0 रा0, अयो0 41/9
31. वा0 रा0, सु0 32/10-12
32. मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः । यत्क्रौन्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।। वही बा, 2/15
33. उत्साहः पौरूषं सत्वमानृशंस्य कृतज्ञता। विक्रमश्च प्रभावश्च सन्ति वानर राघवे।। वा0 रा0, किश्कि0 36/14
34. परा त्वत्तो गतिर्वीर पृथिव्यां नोपपद्यते। परिपालय नः सर्वान् राक्षसेभ्यो नृपात्मज।। वही, अ0. 5/10
35. तामापपन्तीं वेगेन विक्रान्तामशनीमिव ।। शरेणोरसि विव्याध स पपातममार च। वही , बा0 26/25-26
36. वा0 रा0, यु0 107/53-57
37. नैवं रात्रिं न दिवसं न मुहूर्त न च क्षणम्। रामरावणयोर्युद्धं विराममुपगच्छित ।। वही , यु0, 107/66
38. रामरावणयोर्युद्ध रामरावणयेरिव।। वा 0 रा0 यु0, 107/52
39. ;पद्ध त्वं पुनर्जम्बुकः सिंहीं मामिहेच्छसि दुर्लभाम्। नाहं शक्या त्वया स्प्रष्टुमादित्यस्य प्रभा यथा। ;पपद्ध अवसज्य शिलां कण्ठे समुद्रं तर्तुमिच्छसि। सूर्याचन्द्रमसौ चो भौ पाणिभ्यां हर्तुमिच्छसि।। ;पपपद्धयो रामस्य प्रियां भार्या प्रधर्षयितुमिच्छसि।। वही, अ0 47/37, 42-43

40. छिन्ना भिन्ना प्रभिन्ना वा दीप्ता वाग्नौ प्रदीपिता।
रावणं नोपतिष्ठेयं किं प्रलापेन वाश्चिरम्।। वही, सु0 26/10

Corresponding Author

सुधीर कुमार*

शोध छात्र पीएच॰डी॰ (संस्कृत) , सनराईज विश्वविद्यालय , अलवर, राजस्थान